IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# 21वीं सदी के दूसरे दशक के हिंदी उपन्यासों में युवा लेखन - युवा मानसिकता के संदर्भ में

जी भवानी
हिन्दी विभाग का शोधार्थिनी,
मद्रास विश्वविद्यालय,
चेन्नै, तमिलनाडू 600 005.

**सारांश :** बीसवी सदी के बाद भूमंडलीकरण, औद्योगिकरण, तकनीकी एवं संचार प्रौद्योगिकी, नगरों का विस्तार, शिक्षा प्रसार, नारी का बदलता स्वरूप, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग आदि ने सामाजिक परिवर्तन को अग्रसर किया है। परंपरागत भारतीय सामाजिक मूल्यों में बदलाव आया है। समाकालिन हिंदी साहित्य विधाओं में उपन्यास अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि उपन्यास मानव के दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है। आज 21वीं सदी के उपन्यासों में विषय का चयन में छात्रों की तनाव स्थिति, युवा के दिशाहीन जीवन, मध्य वर्ग के आर्थिक संघर्ष, वृद्धावस्था में समस्याएं, स्त्री पुरुष के अनैतिक संबंध, व्यक्ति का जीवन संघर्ष जैसे विषयों पर केंद्रित होता है। इस संदर्भ में दूसरे दशक के साहित्य जगत में युवा लेखक के प्रवेश से सामाजिक मापदंडों में परिवर्तन आया है। उनके रचनाओं के द्वारा उनके साहित्य एवं सामाजिक दृष्टिकोण को समझा जा सकता है। दूसरे दशक के हिंदी उपन्यासों में युवा लेखन के द्वारा युवा मानसिकताओं पर केंद्रित विषयों का प्रस्तुतीकरण मिलता है। इससे वर्तमान समय का सामाजिक दशा एवं दिशा के प्रति जानकारी मिलेगा और युवाओं को सही मार्गदर्शन भी प्राप्त होगा। इससे देश का विकास भी बेहतर बनाने का संभव रहेगा और हिंदी साहित्य के युवा लेखन में युवा का प्रतिनिधित्व एवं सामाजिक परिवर्तनों का असर का जानकारी प्राप्त होता है। अत: दूसरे दशक के युवा लेखकों के उपन्यासों में चित्रित युवा मानसिकता पर अध्ययन करना और युवा लेखकों की मानसिकता को प्रस्तुत करना इस शोध आलेख का उद्देश्य रहा है।

**प्रस्तावना** : आधुनिक युग में मानव का जीवन वैज्ञानिक परिवेश में बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद से जुड़ा रहा है। जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैज्ञानिक सभ्यता समाहित है। वैज्ञानिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी ने बाजारवादी चिंतन व्यक्ति के जीवन को यांत्रिक बनाया है जिसके कारण वह केवल बुद्धि से काम ले रहा है। कहीं-कहीं वह अपनी आत्मा और मन से अलग होकर केवल भोग की प्रवृत्ति को अपनाकर चल रहा है। इसके कारण मानवतावादी विचरण सामाजिक व्यवस्था आदि डांवा-डोल हो गयी है। बाह्य परिवेश का असर उसके मानसिकता पर पड़ता है। इससे समाज में घटित घटनाओं में मानव का परस्पर संबंध और उसके सामाजिक व्यवहारों को विभिन्न पहलुओं को देखा जाता है।

**बीज शब्द :** मानसिकता का अर्थ, हिंदी साहित्य में युवा लेखन, सामाजिक दृष्टिकोण, युवा मानसिकता।

**मानसिकता का अर्थ एवं परिभाषा :**

मानसिकता का अर्थ है "मन का भाव या स्थित मन की वह विशेष स्थिति या वृत्ति जिसके वशवृत्ति होकर मनुष्य बर्ताव या व्यवहार करता है। मानसिकता शब्द की उत्पत्ति इस प्रकार मानी जाते हैं- मनमानस (मन संबंधीए मन में उत्पन्न) मानसिकता (मन से संबंधित)। मनः मनसा, चित, अंतकरण, मन आदि मन के पर्यायवाची शब्द है। मनुष्य के बर्ताव या व्यवहार से मन का संबंध निरूपित हो चुका है। मानव का बर्ताव से ही मानसिकता बोधगम्य बनती हैं।"[1] व्यक्ति का व्यवहार उसकी मानसिकता द्वारा निर्देशित होती है। मानसिकता का निर्धारक स्वभाव जन्य और परिवेश-जन्य होता है। स्वभाव जन्य मानसिकता व्यक्ति का जैविक गुणों के आधार पर होती है। परिवेश जन्य मानसिकता, व्यक्ति का सामाजिक क्रिया-प्रतिक्रिया के द्वारा प्रस्तुत होती है।

**हिंदी साहित्य में युवा लेखनः**

हिंदी साहित्य में युवा लेखन की भूमिका समकालीन परिस्थितियों में महत्वपूर्ण है। वे हिंदी साहित्य में युवा का प्रतिनिधित्व को बहुत यथार्थ दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुतीकरण में सक्षम रहते हैं। युवा समीक्षक कृष्ण मोहन भुमंडलीकरण की वजह से विकसित व्यवसायिकता के प्रति कहते हैं कि-"व्यवसायिकता से आजीविकावाद (कैरियरिज्म) पैदा होता है और यह आजीविकावाद पारिवारिक संबंधों को और संबंधों की भावात्मकता, आत्मीयता आदि को नष्टप्राय कर देता है।"[2] वर्तमान के युवाओं में पढाई, नौकरी तलाश, व्यवसाय, करियर, विवाह, आर्थिक

संघर्ष आदि के प्रति तनाव रहने से बीसवी सदी के अंत तक युवाओं के रुचि साहित्य पर इतनी नहीं रही, इसका जिम्मेवार कही न कही हिंदी साहित्य की पुरानी पीढ़ी भी रही हैं। उन्होंने ने इस कमजोर स्थिती का दायित्व उठाकर अपनी कर्तव्य को निभाया हैं। युवाओं को प्रोत्साहन करने हेतु हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा दूसरे दशक से युवा लेखकों को सम्मान किया जा रहा है। इस 'युवा लेखन पुरस्कार' से आज साहित्य दुनिया कई युवा लेखकों को विकसित किया है। आज साहित्य दुनिया कई युवा लेखकों के साथ अपनी गतिशीलता को प्रस्तुत करते हैं। इन परिस्थितियों में जन्म हुए युवा लेखक अपनी रचनाओं में भूमंडलीकरण, व्यवसायिकता, आजीविकावाद को प्रतिबिंब करने में सक्षम रहते हैं । वे किसी सामाजिक नियमों में दमित रहना नहीं चाहते हैं। व्यक्तिकेंद्रित और स्वच्छंदवाद चिंतन के साथ अपनी रचनाओं को लिखने में स्वतंत्र रहते हैं।

21वी सदी में कई तरह की विषम परिस्थितियों के कारण विश्व में अशांती का वातावरण है। भारतीय समाज में भी विविध समस्याओं पर कहीं सुलझाने का प्रयत्न होने पर भी सफलता न मिलते हैं। जब तक समस्या के सही दृष्टि में नहीं देखा जाता, उसकी गहराई को सही समझ नहीं किया जाता तब तक उसका समाधान भी असंभव ही रहेगा। एक समस्या में किसी दूसरी समस्या का कारण का परिणित होता है। अतः वर्तमान साहित्य में समस्या स्थिति एक होने पर भी उसे जांच करने की मानसिकताओं में युवा लेखन में यह परिचय युवा प्रतिनिधित्व के बहुआयामी आयामों पर प्रकाश डालता है।

**युवा लेखन में सामाजिक दृष्टिकोण :**

मानव जीवन का आधार उसकी मानसिक प्रक्रिया होती है। जैसे कहते हैं स्थिति एक होने पर भी उसे जांच करने की मानसिकता अनेक होती हैं। वैसे साहित्य रचनाओं में उपन्यासों का आधार सामाजिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, संस्कृतिक, व्यक्तिकेंद्रित होता है। अतः युवा लेखकों के उपन्यासों विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर विभिन्न दृष्टिकोण के साथ किया जाता है। वर्तमान समय के प्रसिद्ध उपन्यासकारों में निम्न उपनयासकारों ने पाठकों के मन पसंदित होतें हैं। उनके उपन्यासों का प्रस्तुतिरण इस प्रकार है कि, 'कुणाल सिंह रचित 'आदिगाराम उपाध्याय' 2011 में प्रकाशन हुआ है। इसमें लेखक ने किसान समस्या, गरीबों पर सरकार का उपेक्षा भाव, औद्योगीकरण से गांव में विकसित नुकसान आदि पर अपनी अतृप्त भावनाओं को प्रस्तुत किया हैं। 'भगवंत अनमोल' रचित 'एक रिश्ता बेनाम सा' 2013 में प्रकाशित उपन्यास है। इसमें स्त्री पुरुष के अलौकिक संबंध, विकलांग की मानसिकता एवं सामाजिक भ्रष्टाचार पर लेखक ने नवीन दृष्टीकोण प्रस्तुत किया

हैं और 2017 में प्रकाशित उपन्यास 'जिंदगी 50-50' में किन्नर समस्या और उनके विकास पर व्यक्ति के कर्तव्य बोध को लेखक ने जागृत किया हैं।

नीलोत्पल मृणाल' रचित उपन्यास 'डार्क हार्स' 2015 में प्रकाशन हुआ है। यह व्यक्ति केंद्रित उपन्यास है इसमें उपन्यास में लेखक ने युवाओं के नौकरी समस्या और उससे विकसित संघर्ष स्थिति को पार करने हेतु प्रेरणात्मक मानसिकता को प्रस्तुत किया है। इसमें व्यक्ति के आत्मविश्वास और सामाजिक कर्तव्य मनोवृती का प्रस्तुतीकरण है और दूसरे उपन्यास 2019 में प्रकाशित हुई 'औघड' है। यह एक समाज केंद्रित उपन्यास है इसमें उपन्यासकार वर्ग समस्या, बलात्कार, भ्रष्ट पुलिस, चुनाव समस्या, समाज के विडंबनाएं, सामंतवाद से व्यक्ति का विकास में उत्पन्न बाधाएं आदि का चित्रण प्रस्तुत करके समाज के प्रति अपनी चेतनाशील एवं क्रांतीशील मानसिकताओं को प्रस्तुत किया हैं।

'दिव्य प्रकाश दुबे' रचित 'मुसाफिर केफ' 2016 में प्रकाशित हुई समें परिवार के प्रति व्यक्ति का आधुनिक दृष्टिकोण सिंगल पैरंट होने से नारी का संघर्ष, रिश्तों के नए परिणाम और विवाह संस्कार के प्रति उपेक्षा भाव आदि पर लेखक ने भावात्मक रूप से अपनी दृश्टिकोण प्रस्तुत किया हैं और 2019 में प्रकाशित हुई उनके उपन्यास 'अक्टूबर जंक्शन' में प्यार के प्रति आधुनिक मनोभाव, विवाह के प्रति युवा की विकृत मानसिकता पर अपनी यथार्थ दृष्टि से प्रस्तुत किया हैं। 2019 में प्रकाशित हुई उनके उपन्यास 'इब्नेबतुति' में लेखक ने मां और बेटे के बीच में विकसित आत्मिय संबंध, वात्सल्य को आदर्शपरक मानसिकता के साथ प्रस्तुत किया हैं। पारिवारिक संबंध को बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त करने में 'दिव्य प्रकाश दुबे' सक्षम रहता हैं। इस उपन्यास में लेखक ने पुत्र के द्वारा प्रौढा अवस्था की विधवा मॉं की पुनर्विवाह से समाज में युवा की नवीन सोच परिवार में उसके जिम्मेदारी भाव को प्रस्तुत किया हैं। इससे लेखक की विकासशील मानसिकता को पाठक समझ सकते हैं।

'इंदिरा डोंगी' से रचित उपन्यास 'हवेली सनातनपुर' 2014 में प्रकाशित है। इसमें लेखिका ने परिवार के संबंध में आधुनिक मानसिकता को प्रस्तुत करती है। इसमें भाई-बहन के रिश्ते को मां-बेटे के सम्मानित रूप में आदर्श रूप में प्रस्तुत की हैं। दूसरे उपन्यास 'रपटीले राजपथ' 2017 में प्रकाशित है। इसमें लेखिका ने आधुनिक साहित्य जगत में पनप रहे विडंबनाएं और साहित्यहीन पक्ष को प्रस्तुत करती हैं और युवा एवं युवती के साहित्य में अस्तित्व के लिए संघर्ष, सहजीवन का खंडन आदि पर अपनी आक्रोश भाव को प्रस्तुत करती हैं।

'योगिता यादव' रचित 'ख्वाहिशों के खांडववन' उपन्यास 2017 में प्रकाशन हुआ है। इसमें आधुनिक नारी का बदलता रूप और आत्म निर्भरता को, ग्रामीण परिवेश में विकसित है सामंतवाद और भेदभाव को निड़र एवं दृढ़ मानसिकता के साथ प्रस्तुत करती हैं। 'अनुसिंह चौधरी' की उपन्यास 'भली लड़कियां बुरी लड़कियां' 2019 में प्रकाशन हुआ है। इस उपन्यास में नारी की निर्भरता और सोशल मीडिया का प्रभाव और सूचना प्रौद्योगिकी को सही तरीके से उपयोग करने की तरकीब और नारी के लिए नारी ही शक्ति भाव का निरूपण होता है। इससे लेखिका की सामाजिक मानसिकता प्रस्तुत होती है।

'सत्य व्यास' के रचित उपन्यास 'बनारस टॉकीज' 2015 में प्रकाशित हुई है। इसमें आईआईटी छात्रों के जीवन, हॉस्टल में छात्रों के मौज मस्ती, पढ़ाई में भग्नाशा मानसिकता, समाज में आईआईटी छात्रों का दायित्व का बोध आदी पर विचार किया है। उनका दूसरे उपन्यास 'दिल्ली दरबार' का प्रकाशन 2016 में हुआ है। इसमें लेखक ने कृत्रिम उपयोगिता से विकसित लाभ और हानियां को प्रस्तुत करता है और युवाओं की बदलती मानसिकता का प्रस्तुत करता हैं। जीवन में सफल पाने के लिए 21वीं सदी के युवा, परिश्रम को छोड़कर आसानी से सफलता पाने की कमजोरी मानसिकता को विकसित करता है। इस उपन्यास में लेखक का वैज्ञानिक दृष्टि पाठकों के सामने चित्रण होता है। तीसरे उपन्यास 'चौरासी' 2018 में प्रकाशन हुआ है। इसमें समाज में घटित घटनाओं का वास्तविक चित्रण और राजनीति के संदर्भ में चुनाव प्रक्रिया के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। चौथे उपन्यास 'बागी बलिया' 2019 में प्रकाशित हुआ है। इसमें हिंदू-मुस्लिम एकता को प्रेरित करने के राष्ट्र भाव प्रस्तुत होता है और उनके पांचवी उपन्यास 'उफ्फ कोलकत्ता' 2020 में प्रकाशन हुआ है। इसमें अपने काल्पनिक मानसिकता वैज्ञानिकदृष्टि से वैज्ञानिक सभ्यता पर विचार किया हैं।

'निखिल सच्चान' रचित उपन्यास 'यूपी 65' 2017 में प्रकाशित हुई है। इसमें बनारस शहर और धार्मिक संबंध और सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। दूसरे उपन्यास 'पापा मैन' का प्रकाशन 2020 में हुआ है। इसमें पारिवारिक मूल्यों की पुन:स्थापनों का चित्रण लेखक ने युवाओं में विकसित किया है। इस उपन्यास में पिता और बेटी के बीच वात्सल्य प्रेम को प्रस्तुत किया है और युवा के मन में अपने राष्ट्र के प्रति चेतन को जागृत करने का प्रयास लेखक द्वारा की गई है। इससे राष्ट्रीय मानसिकता का बीज को लेखक ने पाठकों के मन में बोया है। यह स्थिति वर्तमान साहित्य में संतुलन को बढ़ावा देता है।

**दूसरे दशक के उपन्यासों में युवा मानसिकता का प्रस्तुतीकरण :**

भगवंत अनमोल रचित जिंदगी 50-50 उपन्यास में विकलांग लोग पर अपनी संवेदना की भावों को इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि, "अक्सर हम विकलांगों या फिर ऐसे लोगों को अलग से सहानुभूति देते हैं और सहायता करते हैं। हमें कभी उनको यह दिखाकर मदद नहीं करना चाहिए कि वे विकलांग है इससे उनकी विकलांगता मन में अधिक बढ़ती जाती हैं। वह खुद को आपसे कमजोर समझने लगते हैं वैसे ही शारीरिक विकलांगता से अधिक मन की विकलांगता घटक होते हैं ऐसे लोगों को हम मन से विकलांग बनाते जाते हैं।"[3] इसी उपन्यास में किन्नर लोगों के उन्नती के संदर्भ में नवीन बोध को इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि,"अगर उसे यहां पर लाइसेंस नहीं मिला तो वह किस मनोदशा में से गुजरेगा? उसके बाद वह क्या करेगा? जो समाज से अभी तक लड़कर यहां तक पहुंचा है अगर वह भी सड़क पर भीख मांगते हुए आ गया तो इसके जिम्मेदार सिर्फ हम होंगे इसलिए मेरा भी एक कर्तव्य था। मैंने सामाजिक व्यक्ति होने के कर्तव्य पूरा किया।"[4]

भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज है। हमेशा बेटा के प्रति आदर्श मानसिकता होता हैं। लेकिन परिवेश बदल चुका है। आजकल के संदर्भ में बेटा हो या बेटी हो या किन्नर हो जो भी युवा का प्रतिनिधित्व करता है उनमें दायित्व निभाने का कर्तव्य भाव सक्षम होता है। भगवंत अनमोल रचित जिंदगी 50-50 उपन्यास में किन्नर बेटी हर्षिता अपने परिवार के लिए कुछ जिम्मेदारियां लेना चाहती है। इसलिए अपने पिता के साथ अपने फर्ज निभाने के लिए नीलामी हुई खेत को वापस लौट कर अपनी कर्तव्य पूरा करती हैं। इस संदर्भ में वह अपने मन में इस प्रकार सोचती हैं कि,"मेरे कारण उन्हें जितने दुखों और अपमान का सामना करना पड़ा था उसकी भरपाई करने का इससे वाजिब वक्त हो ही नहीं सकता था उनके चेहरे पर अपने खेत मिल जाने से जो सुकून आएगा जो रौनक आएगी उसे खुशी का अंदाजा सिर्फ में ही लगा सकती थी उन्होंने मुझे बेटा या बेटी कुछ नहीं समझा पर मैं हमेशा उन्हें अपना बाबूजी समझा और मन है आज वक्त आ गया था उसे बाबूजी के लिए कुछ कर दिखाने का।"[5] इससे किन्नर बेटी की सहानुभूती, दायित्व बोध और दृढ़ मानसिकता प्रस्तुत होती है।

'एक रिश्ता बेनाम सा' उपन्यास में भ्रष्टाचार के प्रति पाठकों के मन में चेतना एवं आत्मबोध को विकसित करता है कि, "आजकल सभी लोगों की नजरों में भ्रष्टाचार सिर्फ रूपों पैसों के घोटाले तक ही सीमित रह गया है परंतु ऐसा नहीं है भ्रष्टाचार की श्रेणी में हर वह ,चीज आते हैं जो गलत तरीके से पूर्ण की जाए भले ही वह यौन संबंध पैसा धोखाधड़ी या चोरी करना हो सभी भ्रष्टाचार के अंतर्गत ही आते हैं।"[6] इसी उपन्यास में स्त्री

पुरुष के संबंध के प्रति अपनी आदर्श विचार को इस तरह प्रस्तुत करता है कि,"सबके दिमाग में यह बात घर करके बैठ गए की एक लड़का एक लड़की कभी दोस्त बनकर रहे ही नहीं सकते परंतु हम लोग इस वाक्य का अपवाद थे।"[7] भ्रष्ट समाज के प्रति चेतनाशील युवा की मानसिकता को लेखक ने इस कथन के द्वारा प्रस्तुत करता है कि,"आजकल सभी लोगों की नजरों में भ्रष्टाचार सिर्फ रूपों पैसों के घोटाले तक ही सीमित रह गया है परंतु ऐसा नहीं है भ्रष्टाचार की श्रेणी में हर वह चीज आते हैं जो गलत तरीके से पूर्ण की जाए भले ही वह यौन संबंध पैसा धोखाधड़ी या चोरी करना हो सभी भ्रष्टाचार के अंतर्गत ही आते हैं।"[8]

'अक्टूबर जंक्शन' उपन्यास में लेखक 'दिव्य प्रकाश दूबे' ने विवाह के प्रति अपनी आधुनिक दृष्टिकोण को इस तरह प्रस्तुत करता है कि,"शादी करते ही सब कुछ वही रहते हुए भी बदल जाता है इसलिए जिससे खूब प्यार हो उसे कभी शादी नहीं करनी चाहिए।"[9] 'मुसाफिर कैफ' उपन्यास में लेखक 'दिव्य प्रकाश दुबे' ने शादी के प्रति युवा की मानसिकता को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की युवती सुधा शादी के प्रति अपनी भय को इस प्रकार व्यक्त करती है कि, "मैं इतने तरीके से शादी टूटे हुए देख चुकी हूं कि मुझे बस डर लगता है शादी से इतना डर की अगर कभी सपने में भी हमारी शादी आते हैं तो सपना टूट जाता है ।...शादियों में जो लोग अलग होते हैं बच्चे खराब नहीं होते खराब बस शादी होती है।"[10] उनहोंने जीवन का वास्तविक दृष्टिकोण को यथार्थ मानसिकता के द्वारा प्रस्तुत करता है कि, "हम सब लोग पहले से प्रोग्राम किए हुए वीडियो गेम का हिस्सा है। जो चाहे गेम जीते या हारे, एक दिन बोर होकर कोई हमारे पावर सप्लाई बंद कर देगा।"[11] 'रपटीले राजपथ' उपन्यास में लेखिका 'इंदिरा डोंगी' ने पारिवारिक मूल्य पर अपनी दृष्टिकोण आदर्शशील मानसिकता को इस तरह प्रस्तुत करती हैं कि,"सबसे पहले मैं आपका बेटा हूं वही मेरी असली पहचान है जो काम आप करते हैं वही मैं करूंगा लेकिन कुछ बेहतर तरीके से।"[12] सुरभि सिंगल रचित उपन्यास 'वापसी इंपॉसिबल' में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण युवाओं की दुर्दशा को प्रस्तुति की है। इस उपन्यास में समय का सदुपयोग करने में युवती असमर्थ रहती है। वर्तमान में यूट्यूब,फेसबुक ट्विटर इसमें ज्यादातर युवा भागीदार रहने के कारण अपने भावी जीवन के प्रति लक्ष्य हीन रहते हैं। इसका परिणीति भोगने वाले युवा को लेखिका ने चेतावनी के रूप में इस कथन को प्रस्तुत करते हैं कि, "कुछ फेसबुक पर बने मोटिवेशनल पेज, जिन पर पूरा दिन निकलना मेरा सबसे बड़ा टाइम पास बनता जा रहा था।"[13]

'नीलोत्पल मृणाल' रचित उपन्यास 'डार्क हार्स' 2015 में प्रकाशन हुआ है। इस उपन्यास में समाज में प्रचलित सामाजिक विसंगति से उत्पन्न मानसिक क्रोध को व्यक्त करता है कि, "कोचिंग एक आवश्यक बुराई है इससे कोई नहीं बच सकता। आखिर कोचिंग किस तरह का मायाजाल है।"[14] इसमें लेखन भाषा को लेकर उत्पन्न समस्या खास अंग्रेजी भाषा के विरोध में अपनी आक्रोश भाव प्रस्तुत किया है कि, "अंग्रेजी दुनिया की एक

कामगार भाषा है, इसे सीखना चाहिए इससे हमें कोई एतराज नहीं पर अंग्रेजी ही जीवन का आदर और सबसे कामगार है, यह हजम नहीं होगा सुन के। भाषा संवाद का माध्यम भर है उसे वहीं रहने दीजिए।"[15] इससे प्रेरणात्मक मानसिकता प्रस्तुत होता है कि, "जब सुरक्षा की जिम्मेदारी अपनी है तो हमारे सुरक्षा और हमारे भरोसे के साथ खिलवाड़ करने वाले जिंदगी आदमी को दौड़ने के लिए कई रास्ते देती हैं, जरूरी नहीं है कि सब एक ही रास्ते दौड़े। जरूरत है कि कोई एक रास्ता चुन लो और उसे ट्रैक पर दौड़ पडो। रुको नहीं... दौड़ते रहो। क्या पता तुम किसी दौड के डार्क हार्स साबित हो जाओ।"[16] इससे पाठकों के मन में प्रेरणात्मक विचार उत्पन्न होता है। 'नीलोत्पल मृणाल' रचित 'औघड' उपन्यास में बेरोजगार के संदर्भ में युवा की अतृप्त मानसिकता को प्रस्तुत किया है। लेखक ने अपनी इस भाव को बिरंची युवा के द्वारा इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि, "सरकारी नौकरी की चाहत में यकई सरकारी फॉर्म डाल चुका था बिरंजी पर जूते कैसे और कलम ना उठा पाने के सब में पहले तो एक मनोरोगी की तरह घर के एक कमरे में बंद रहा और जब साल भर बाद बाहर निकाला तो जैसे वह बीरंजी थाप ही नहीं कलम छुट्टी और उसकी जगह चिलम आ गई।"[17] इससे समाज में बेरोजगार के संदर्भ में युवा की दयनीय स्थिति के प्रति विकसित अतृप्त मानसिकता प्रस्तुत होता है।

'पापा मैन' उपन्यास का लेखक 'निखिल सच्चान', देश के प्रति राष्ट्र भाव को इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि, "सारे अच्छे लोग देश छोड़कर चले गए तो देश की अच्छा कौन बनाएगा और ऐसा इनोवेशन जो किसी के काम आ जाए उससे बड़ा इनोवेशन कुछ नहीं होता।"[18] इस उपन्यास में युवती चुटकी अपने विदेश जाने की विचार को बदलकर इस प्रकार कहती हैं कि "पहले अपना घर और अपना शहर तो रोशन कर लूं, दुनिया बाद में रोशन कर लूंगी।"[19] इससे चंद युवाओं में राष्ट्र के प्रती और पारिवारिक बोझ का दायित्व लेने में युवा का समर्थन भाव प्रस्तुत होता है।

'योगिता यादव' रचित उपन्यास 'ख्वाहिशों का खांडववन' का केंद्र बिंदु विकासशील नारी है। लेखिका ने कई संदर्भ में नारी की बदलती मानसिकता को प्रस्तुतीकरण में सक्षम रहती हैं। आधुनिक संदर्भ में युवा लड़कियाँ शादी संस्कार में विकृत मानसिकता प्रस्तुत करती हैं। इस उपन्यास की सुनीता शादी के संदर्भ में अपने परिवार से इस प्रकार कहती है कि, "मुझे शादी करनी ही नहीं है। मैं अकेले बिना शादी के भी रह सकती हूं। पढ़ लिख रही हूं। खुद कोई नौकरी करूंगी। आप लोगों पर बोझ नहीं बनूंगी।"[20] इस में आजकल के नारियों में आत्मबल के साथ भविष्य के प्रति विकासशील मानसिकता भी प्रस्तुत होती हैं।

इन उपन्यासों के द्वारा सामाजिक परिस्थितियों में विकसित युवा मानसिकताओं का विश्लेषण प्राप्त होती है। इस आधनिक परिस्थितियों के प्रति विशेष संदर्भ में ममता कालिया ने 'दौड़' उपन्यास की भूमिका में सामाजिक परिवेश और युवा मानसिकता के संदर्भ में इस प्रकार विचार करती है कि, "भूमंडलीकरण और उत्तर औद्योगिक समाज ने 21वीं सदी में युवा वर्ग के सामने एकदम नए ढंग के रोजगार और नौकरी के रास्ते खोल दिए हैं। ...आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय बाजार को शक्तिशाली बनाए इसने व्यापार प्रबंधन की शिक्षा के द्वारा खोले और छात्र वर्ग को व्यापार प्रबंधन में विशेषता हासिल करने के अवसर दिए युवा वर्ग ने अवसर प्रदान किए। युवा वर्ग ने पूरी लगन के साथ इस सिम सिम द्वारा को खोला और इसमें प्रविष्ट हो गया। वर्तमान सदी में समस्त अन्य वाद के साथ एक नया वाद आरंभ हो गया, बाजारवाद और उपभोक्तावाद।"[21] हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कृत युवा लेखक भागवंत अनमोल ने भ्रष्टाचार के संदर्भ में अपने उपन्यास 'एक रिश्ता बेनाम सा' में भ्रष्टाचार के प्रति युवाओं को मार्गदर्शन दिया हैं। उनका कथन इस प्रकार हक, "दुनिया बदलने की शुरुआत हमें उसे चेहरे से करनी चाहिए जो आईने के सामने नजर आता है।"[22] दिव्य प्रकाश दुबे रचित 'मुसाफिर केफ' उपन्यास में लेखक द्वारा जीवन के प्रति पाठकों को प्रेरणात्मक मिलता है। उनका कथन इस प्रकार है कि, "लाइफ की कोई मीनिंग नहीं होती उसमें मीनिंग डालना पड़ता है।"[23]

21वीं सदी में साहित्यिक प्रमाणों के अनुसार साहित्य में विकसित अच्छाई एवं बुराई दोनों के प्रमुख कारण सामाजिक घटना प्रसंग तथा मानव की मानसिकता ही रहता है। जीवन के खंडित मूल्य के स्थान पर नए मूल्यों की स्थापना का आग्रह 'दिखाई देता है। आज की युवा असंतुष्टी और टूटी हुई अवस्था में भी जीवन से जूझ रही हैं और इस दौरान उसकी अपनी नई जीवन दृष्टि भी जन्म ले रही हैं। अस्तित्वादी मानसिकता से व्यक्ति अपनी 'स्व' की तलाश में 'मैं और मैं ही हूं' की मानसिकता यानी व्यक्तिवाद प्रवृत्ति में व्यक्तिकेंद्रित मानसिकता के साथ चल रहा है। युवा लेखन का उद्देश्य मुख्यतः युवा के जीवन में व्याप्त आधूनिकतावादी भावबोध की अलगाव, अस्तित्वादिता, अस्थिरता आदि प्रवृत्तियों की व्याप्ति का समर्थन करना है।

**निष्कर्ष :**

आज का युग यांत्रिक युग है। इस युग का केंद्रित आधार 'अर्थ' होता है। इस युग में मनुष्य कई प्रकार के वैज्ञानिक सुविधाओं के साथ भोगवादी जीवन गुजार रहा है। मुख्यतः एंड्रॉयड फोन, इंटरनेट, गूगल और AI आदी हमारी दैनिक जीवन में जुड़े रहता है। इस प्रवृत्ति के साथ साहित्यकारों का जीवन भी चलने के कारण उनके रचनाओं में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव रहता है। अतः युवा लेखन में चेतना और जागरण के साथ व्यक्तिवाद

प्रगतिवाद के सिद्धांत का भी प्रस्तुतीकरण है। 'समाज के प्रति कम और व्यक्ति पर अधिक ध्यान' में लिखने वाले लेखक का संख्या को निरूपण होता है। इस संदर्भ में युवा वर्ग का मार्गदर्शन सही ढंग से किया गया तो हिंदी साहित्य का विकास और भी प्रगतिशील होगा।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1. आधुनिक हिन्दी कहानियों में युवा मानसिकता, डॉ. पदमा चमेली,समता प्रकाशन,कानपुर 209303,पृ.10
2. दौड़, उपन्यास के भूमिका,ममता कालिया,2000, वाणी प्रकासन,नयी दिल्ली 110002,पृ.6
3. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, 2017, राजपाल&संस,दिल्ली, 110006, पृ.15
4. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, 2017, राजपाल&संस,दिल्ली, 110006, पृ.197
5. भगवंत अनमोल, जिंदगी 50-50, 2017, राजपाल&संस,दिल्ली, 110006, पृ.178
6. भगवंत अनमोल, एक रिश्ता बेनाम सा, 2013, साहित्य संचय, दिल्ली, 110094, पृ.135
7. भगवंत अनमोल, एक रिश्ता बेनाम सा, 2013, साहित्य संचय, दिल्ली, 110094, पृ.87
8. भगवंत अनमोल, एक रिश्ता बेनाम सा, 2013, साहित्य संचय, दिल्ली, 110094, पृ.135
9. दिव्य प्रकाश दूबे, अक्टूबर जंक्शन, 2019, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.121
10. दिव्य प्रकाश दूबे, मुसाफिर कैफ, 2019, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.84
11. दिव्य प्रकाश दूबे, मुसाफिर कैफ, 2016, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.39
12. इंदिरा डोंगी, रपटीले राजपथ, 2017, राजपाल&संस,दिल्ली, 110006, पृ.64
13. सुरभि सिंगल, वापसी इंपॉसिबल 2015, रेड ग्राब बुक्स, हलाहाबाद, पृ.21
14. नीलोत्पल मृणाल, डार्क हार्स, 2017, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.65
15. नीलोत्पल मृणाल, डार्क हार्स, 2017, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.91
16. नीलोत्पल मृणाल, डार्क हार्स, 2017, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.176

17. नीलोत्पल मृणाल, औघड, 2019, हिन्दी युगम, यूपी 201301, पृ.23

18. निखिल सच्चान, पापा मैन, 2017, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.206

19. निखिल सच्चान, पापा मैन, 2017, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.199

20. योगिता यादव, ख्वाहिशों के खांडववन, 2017, सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, पृ.9

21. ममता कालिया, दौड़ उपन्यास के भूमिका से, 2000, वाणी प्रकासन, नयी दिल्ली 110002,पृ.5

22. भगवंत अनमोल, एक रिश्ता बेनाम सा, 2013, साहित्य संचय, दिल्ली, 110094, पृ.141

23. दिव्य प्रकाश दूबे, मुसाफिर कैफ, 2019, हिन्दी युगम, दिल्ली 110091,पृ.75

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation